

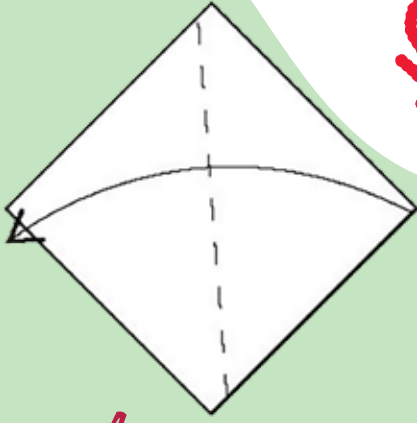
चकमक



तुम्हीं भी सी-हॉर्स

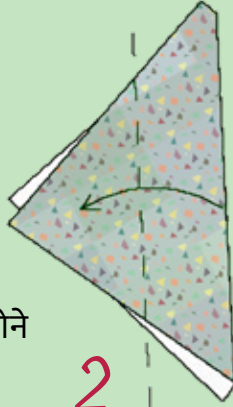


जुगाड़: चौकोर कागज़।



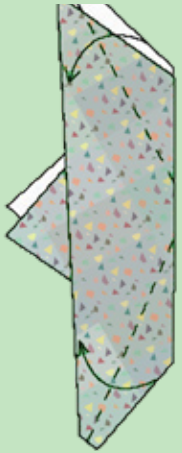
1

चौकोर कागज़ को बीच से मोड़ लो। ध्यान रखना कि कोने एक-दूसरे पर फिट ना हों।



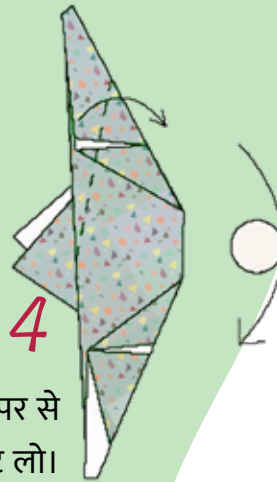
2

इसे फिर से मोड़ो।



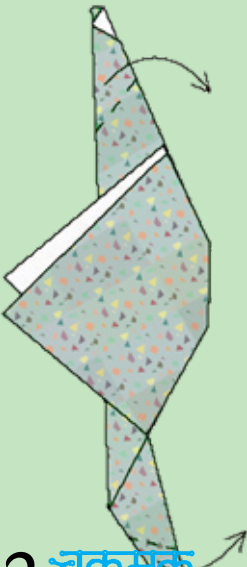
3

अब ऊपर और नीचे के किनारों को मोड़ो।



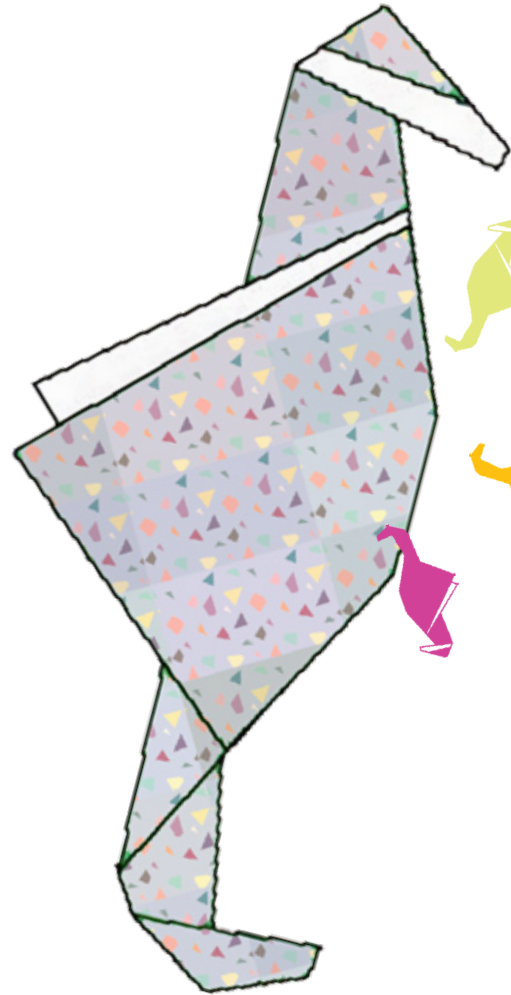
4

अब पूरी आकृति को ऊपर से नीचे की ओर पलट लो।



5

सिर बनाने के लिए पतले ऊपरी सिरे को मोड़ो। इसी तरह पूँछ बनाने के लिए पतले निचले सिरे को मोड़ो।



बस तुम्हारा सी-हॉर्स तैयार है। चाहो तो अलग-अलग रंगों और आकारों के सी-हॉर्स बनाकर देखो।



चकमक



इस बार



तुम भी बनाओ - सी-हॉर्स	2
भूत का डर - राज आर्यन	4
बेतवा नदी के किनारे... - भाग 2 - आस्था चौधरी	8
लूनी अख्तर - वसुंधरा बहुगुणा	12
क्यों-क्यों - हमारा जवाब - सुशील जोशी	16
भूलभुलैया	17
क्यों-क्यों	18
मेंढकों की कुछ बातें - रोहन चक्रवर्ती	22
किताबें कुछ कहती हैं...	24



गणित हैं मज़ेदार -कैलेण्डर के साथ मज़ेदार...

- आलोका कान्हेरे 26

चित्रपहेली 32

अमन की कुछ बातें - झगड़ा निपटाने के...

- अमन मदान 34

माथापच्ची 36

मेरा पन्ना 38

तुम भी जानो 43

मोर - नेहा बहुगुणा 44

आवरण: अस्मिता कोरपेनवा

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

डिज़ाइन

कनक शशि

सह सम्पादक

कविता तिवारी

डिज़ाइन सहयोग

इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

यूँ तो मैं भूतों को मानता ही नहीं हूँ। लेकिन उस दिन की कुछ घटनाओं ने एक-दूसरे के साथ ऐसा तालमेल बना लिया था कि कुछ दिनों के लिए मेरा दिमाग ही हिल गया था।

भूत का डर

राज आर्यन
पन्द्रह वर्ष, किलकारी बिहार बाल भवन,
पटना, बिहार
चित्र: अस्मिता कोरपेनवा

लगभग डेढ़ साल पहले कोरोना के साथ-साथ बरसात का भी मौसम चल रहा था।


घर पर मेहमान आए हुए थे। साथ में उनका बेटा साहिल भी था। वह मेरी ही उम्र का था।

एक रात मुझे टॉयलेट लग गई।

आधी रात थी। पूरा घर
अँधेरे के तालाब में डूबा
था। मैं किसी को उठा भी
नहीं सकता था।
मैंने सोचा, “क्या कहेंगे
मेहमान लोग, मैं डरपोक
हूँ।” यह सोचकर मैं
टॉयलेट चला गया।


डर मेरे अन्दर अब भी था।
बारिश की टप-टप आवाज़ मेरे कानों
तक पहुँच रही थी कि तभी अचानक-
से झन-झन की आवाज़ आने लगी।

आवाज़ तेज़ होती गई।
मुझे याद आया कोरोना के कारण
कुछ दिन पहले ही नीचे एक आंटी
का देहान्त हो गया था।




मैंने सोचा हो ना हो यही हैं वह। मैं तेज़ी-से कमरे में आया... और चादर तानकर सो गया।

अगले दिन दोपहर में सभी लोग एक साथ बैठे थे। तभी साहिल बोला, "मैंने कल बाथरूम में पायल की आवाज़ सुनी। मुझे बहुत डर लगा।" सब उस पर हँसने लगे।





क्या सच में घर में कोई भूत है? मुझे यह दिखावा करना होगा कि मैं साहिल से सहमत नहीं हूँ, नहीं तो लोग मेरी भी खिल्ली उड़ाएँगे।

मैंने मज़ाक तो उड़ा दिया, पर डर अब और बढ़ गया था। उस रात मुझे फिर टॉयलेट लगी।



पर मैं जाने की स्थिति में नहीं था। काफी देर मैं ऐसे ही लेटा रहा। पर अब जाने का समय आ गया था।

हनुमान चालीसा के सहारे मैं बाथरूम के गेट तक पहुँचा...



...जैसे ही दरवाज़ा खोला कि झन-झन, झन-झन। फिर वही आवाज़। मैं वापिस कमरे में आया और चादर ओढ़ ली।

अगले दिन मैं उठा तो रात की उस घटना को साथ लेकर...



मैं मोबाइल देखने लगा। देखते-देखते अचानक एक आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी रात को बाथरूम से आती थी।



झींगुर की आवाज़..

उस ऑडियो में लिखा था 'झींगुर की आवाज़'। मैंने अब गूगल पर झींगुर के बारे में सर्च किया। उसकी और आवाज़ें सुनीं, उसके बारे में जाना।



पता चला झींगुर ताड़ के पेड़ पर रहते हैं और मेरे बाथरूम के पीछे तीन-तीन ताड़ के पेड़ हैं। झींगुर और पायल की वो आवाज़ बिल्कुल सेम थी। अब मैं समझ गया था कि वो कोई भूत-वूत नहीं था, बल्कि वो तो एक कीड़ा था जो बरसात का लुत्फ उठा रहा था।



भाग 2 बेतवा नदी के किनारे-किनारे ओरछा से बुर्हवार तक

आस्था चौधरी

1 दिसम्बर

रास्ता: ओरछा रॉयल छत्री - बेतवा झरना - फुलकारी गाँव - मरोद पूर्व गाँव - खिरखण्ड

दूरी: 18.8 किलोमीटर

सुबह 6 बजे हमने अपनी यात्रा शुरू की। पैदल यात्रा शुरू करने का उत्साह हमारी रगों में दौड़ रहा था। चाय की खुली हुई दुकानों पर लगी भीड़ की वजह से ओरछा शहर व्यस्त लग रहा था। हम 20 मिनट तक ओरछा की शाही छत्रियों की ओर चलते रहे। यह बेतवा नदी के सामने पत्थर के बने टॉवरों का खूबसूरत समूह है। छत्रियों के कोनों में बैठे बहुत सारे गिद्ध बेतवा में नहाने आए सैकड़ों श्रद्धालुओं को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहे थे।

लाउड स्पीकर से बार-बार घोषणा की जा रही थी कि महिलाओं के कपड़े बदलने के लिए नदी के किनारों पर टेंट लगाए गए हैं। लेकिन ज़्यादातर लोग इस पर ध्यान नहीं दे रहे थे। कभी-कभी कोई गिद्ध उड़ान भरता। उसके विशाल पंखों के कारण उसकी उड़ान अजीब लगती।

सैकड़ों श्रद्धालुओं

का एक अन्य समूह टट्टी के लिए खाली प्लॉटों और ओरछा के पास नदी के किनारों की ओर जा रहा था। इस समूह में सैकड़ों महिलाएँ, पुरुष व बच्चे शामिल थे। इस सब से गुज़रते हुए हमने नदी को पार करने की एक जगह खोज ली और खेतों वाले इलाके की ओर बढ़ गए। यहाँ हमें कँटीले तारों की बाड़ों को पार करना पड़ा जो कई एकड़ क्षेत्र में ताज़े बोए गए गेहूँ की रक्षा के लिए लगाई गई थीं।

हम बेतवा नदी के चट्टानी किनारों तक पहुँचने में कामयाब रहे। इस क्षेत्र में बेतवा का बहाव तेज़ है। पैदल यात्रा करने के लिए यह एक मुश्किल क्षेत्र है। बड़े-बड़े पत्थरों पर चढ़ना और फिर खड़ी ढलानों पर चढ़कर वापिस खेतों में जाना नदी किनारे की पैदल यात्रा को वास्तव में मुश्किल बनाता है। कुछ-कुछ जगहों पर छोटी-छोटी छत्रियाँ दिखाई दीं, जबकि कुछ जगहों पर खुले हुए कुएँ भी दिखे। ऐसा लग रहा था कि कुएँ उसी तरह के पत्थरों से घिरे थे जिनसे छत्रियाँ बनी थीं।

खेतों और बैरीकेड को पार करते हुए हम बेतवा झरने के पास आए। नदी किनारे चलते-चलते हमारी कई लोगों से मुलाकात हुई। हमारी उनसे कई विषयों पर बातचीत हुई जैसे कि खेती-बाड़ी, मवेशियों और पानी की स्थिति, गिद्ध, जंगली जानवरों से मुठभेड़, आर्थिक स्थिति इत्यादि। उनमें से कुछ लोगों से हुई बातचीत मैंने यहाँ दी है।



छत्री पर बैठा गिद्ध

गणेश आदिवासी, 60 साल, ओरछा: (सोर आदिवासी, सुदामा के वंशज)

गणेश ओरछा में मज़दूर थे और पशुधन बेचकर गुज़ारा करते थे। उन्होंने ओरछा ('पण्डितों का शहर') छोड़कर नदी के किनारे इसके बाहरी इलाके में बसने का फैसला किया। उनके दो बेटे हैं, जो ओरछा में काम करते हैं। वे एक साधारण-से घर में रहते हैं, जिसमें न तो बिजली का कनेक्शन है और न ही टॉइलेट। वह कहते हैं कि उन्हें सरकार से कोई लाभ नहीं मिला।

5-6 साल पहले उन्होंने नदी के किनारे 3-बीघा ज़मीन को खेती के लिए उपयुक्त बनाने का फैसला किया। उन्होंने अपने हाथों से पत्थरों को तोड़ा और गेंहूँ और सब्जियों की खेती के लिए जगह को साफ किया। उन्हें 10-12 बर्रा गेंहूँ मिलता है। ज़मीन को वैध बनाने के लिए उन्हें 10-20000 रुपए रिश्वत देनी पड़ी।

“पिछले 10-12 साल से बेतवा नदी में बहुत कम पानी रहा है। इस बार भले ही बरसात अच्छी हुई है लेकिन भू-जल का स्तर बढ़ने के लिए इससे ज़्यादा पानी लगेगा। पीने का पानी हम एक खुले कुँए से लेते हैं। पड़ोसियों ने 125 फीट पर हैंडपम्प लगाए हैं, लेकिन दोनों फेल हो गए।”

हरि राम, नदी के किनारे गाय चराते हुए मिले

उन्होंने बताया कि उनके पास 6-7 बैल हुआ करते थे। अब सिर्फ दो ही हैं। कोई गाय नहीं रखता है। लोग भैंस रखते हैं क्योंकि उनमें कम खर्चा लगता है और वो दूध ज़्यादा देती हैं।

“पहले हम हज़ारों गिद्ध देखते थे। अब सब गायब हो गए हैं।”

गणेश आदिवासी

राकेश यादव, गाँव फुलकेरी

पीने का पानी खुले कुँओं से मिलता है। कुछ

5-6 कुँओं में पानी है। 4-5 हैंडपम्प भी हैं, लेकिन 200 फीट की गहराई होने के बावजूद वे फेल हैं। गाँव में सातवीं तक स्कूल है। आठवीं के लिए उनकी बेटी ओरछा में प्राइवेट स्कूल जाती है। वे कहते हैं कि सरकारी स्कूल में बाकी सब कुछ मिल जाता है सिवाय पढ़ाई और ज्ञान के। कहते हैं कि अपनी बेटी को सरकारी स्कूल में डालूँगा तो वो पढ़ेगी नहीं।

“गाँव में 100 से भी ज़्यादा आवारा गायें हैं। ये सब 5 साल पहले शुरू हुआ था जब जनने लायक ना रह जाने के बावजूद भी इन्हें बेचने पर पाबन्दी लगाई गई थी। अब तो कुत्तों की कीमत इन गायों से ज़्यादा है। गाय की हत्या रोकना चाहते हो तो ये ठीक है, लेकिन गौशाला तो शुरू करो। लोग अपनी गायों को ओरछा के जंगलों में छोड़ आ रहे हैं और वे हमारी फसल पर हमला करती हैं।”



हरिराम के साथ बातचीत करता हुआ मोहित।

राजकुमार कुशवाहा, बागान गाँव

50-60 एकड़ ज़मीन है ओरछा के पहाड़ के नीचे। 8-10 एकड़ की सिंचाई खुले कुएँ से होती है बाकी की बोरवेल से।

“हम गाय बेच नहीं सकते तो कुछ 5 साल पहले मैं उन्हें जंगलों में छोड़ आया। अब हमारे पास सिर्फ भैंस हैं। लेकिन गली की गायें बड़ी समस्या बन गई हैं। रात को मैं हाथ में लाठी रखकर यहाँ सोता हूँ और गायों को भगाता हूँ।”

नज्जू कुशवाहा, लाड़पुरा गाँव

नदी का पानी हम तो पीते हैं, लेकिन पहली बार पीने वाले अक्सर बीमार पड़ सकते हैं।

“हमारी उड़द की फसल बरसात में बह गई। हमने मूँगफली नहीं लगाई क्योंकि इसमें ज़्यादा पानी लगता है।”

आर एस गोस्वामी, डिप्टी रेंज अफसर, चैक पोस्ट, ओरछा वन्यजीव अभ्यारण्य

ये चैक पोस्ट गाँववालों द्वारा की जाने वाली लकड़ी की तस्करी और जानवरों के शिकार का पता लगाने के लिए है।

एक सुन्दर बोरवेल, जिसके पानी की जाँच हमने की।



“डायक्लोफीनैक के इस्तेमाल के कारण गिद्ध धीरे-धीरे विलुप्त हो रहे हैं। हर साल जनवरी में उनकी गणना होती है। 2019 में 40-45 गिद्ध गिने गए थे। जंगलों को काफी हद तक यहाँ बरबाद किया गया है। बहुत सारे लोग गायों को अब जंगलों में छोड़ने लगे हैं। हम 5-6 गौशाला चला रहे हैं ताकि उनकी आबादी ना बढ़े। जंगली जानवरों और इन्सानों की यहाँ पर अक्सर मुठभेड़ होती है।”

सूरज भान यादव और पप्पू यादव, मरोद पूर्व गाँव

पीने के पानी की बड़ी दिक्कत है। बरसात का पानी ज़मीन सोखती नहीं है। 20-22 बीघा ज़मीन है। वे यहाँ ज़्यादा कुछ उगा नहीं सकते हैं। बेरोज़गारी भी बहुत है।

“रात को हम सोते ही नहीं हैं। यहाँ बहुत सारी गायें हैं। अगर सरकार कुछ नहीं करती है तो कुछ सालों में इनकी संख्या दुगुनी हो जाएगी। पूरे ललितपुर ज़िले से लोग यहाँ आकर अपने गायें छोड़ देते हैं। जंगलों में कुछ घास और नदी में पानी है। पिछले 5 सालों में ये दिक्कत बढ़ गई है। 1000 से ज़्यादा नीलगाय और जंगली सूअर हमारे खेतों पर डाका डालते हैं।”

मरोद से खिरखण्ड की पैदल यात्रा में एक घण्टा लगता है। रास्ता निम्नीकृत वन भूमि का था। कितने घने जंगलों को काटा गया है — अब ये ज़मीन चारागाह जैसी दिखती है। पत्थर से बनी दीवारें जंगल को चिह्नित करती हैं लेकिन सैकड़ों गाय और बकरियाँ यहाँ चरने के लिए लाई जाती हैं।

गाँवों को जोड़ते हुए कोई पक्का रास्ता नहीं है और पगडण्डी भी अक्सर गायब हो जाती है। कुछ गाँववाले (पहाड़ के ऊपर मन्दिर से लौटती हुई महिलाएँ, बाहर दिन बिताकर बाइक पर लौटने वाले युवक या गाँव लौट रहे चरवाहे) हमें सही दिशा में जाने में मदद करते हैं। अपनी पत्नी और छोटे बच्चे को लहार ठाकुर्ता की तरफ बाइक पर ले जा रहा एक आदमी लौटकर हमें एक किलोमीटर

दूर एक पत्थर की टेकरी पर छोड़ देता है। सिर्फ हमें ले जाने के लिए उसने अपनी पत्नी और छोटे बच्चे को बीच रस्ते रुकने को कहा था।

उस दिन की पैदल यात्रा के दौरान हम एमपी-यूपी सीमा पार कर यूपी में आ गए।

हमें कुछ चिन्ता थी कि सूरज ढल चुका था और हमें कोई गाँव नहीं दिख रहा था। कुछ समय बाद हम घबराने लगे – हमें रास्ता पूछने के लिए कोई मिल भी नहीं रहा था। अच्छा हुआ कि हमें एक कुत्ता दिख गया और हम समझ गए कि पास में कोई गाँव होगा। आखिरकार हमें घरों का एक डेरा और हैंडपम्प पर एक महिला दिखीं। उन्होंने हमें एक आदमी, भरत यादव, तक पहुँचाया जो एक बछड़े को बाँध रहे थे। उन्होंने तुरन्त हमें मन्दिर के पास बैठने को कहा। कुछ 10 मिनट बाद आकर वे हमें अपने घर ले जाते हैं और अपने पिताजी कैलाश यादव और परिवार से मिलते हैं। खुले दिल से हमें खाने और रहने के लिए कहते हैं। हमें रोटी, कढ़ी, अचार और मिर्ची खिलाते हैं। उनकी पत्नी शाम भर हमसे बातें करती रहीं। उनके सत्कार ने हमारा दिल छू लिया।

उनका प्यारा-सा घर है। सामने के कमरे में बाइक खड़ी हैं और वहाँ हमारे सोने के लिए बिस्तर लगाया गया है। कैलाश जी भी उसी कमरे में एक पलंग पर सोते हैं। यहाँ से एक आँगन खुलता है और कम से कम तीन कमरे जिनमें कैलाश के दो बच्चे रहते हैं। एक अन्य दरवाज़ा तबेले की तरफ जाता है। वहाँ कई भैंसें सो रही हैं।

घर में कोई टॉइलेट नहीं है और सुबह-सुबह टट्टी करने गाँववाले आसपास की टेकरियों पर चले जाते हैं।

कैलाश यादव, खिरखण्ड

इनकी 8 एकड़ ज़मीन है और सरकारी ज़मीन पर भी खेती करते हैं। चार भैंसें और दो गायें हैं।

“यहाँ 300 मतदाता हैं और लगभग सब यादव हैं। कहानी ये है कि यादव लोग लहार ठाकुरता के एक मोहल्ले में रहा करते थे जहाँ ठाकुर हावी थे। 200 साल पहले दोनों के बीच एक लड़ाई छिड़ जाती है और यादव गाँव से भाग निकलते हैं। बुन्देल राजा शान्ति कायम करने के लिए यादवों को अपनी गायों के साथ जंगलों में रहने देते हैं। जंगलों को साफ कर खेत बनाए जाते हैं।

इंदिरा गाँधी के समय ये सारी ज़मीन वैध हो गई। गाँव बेतवा नदी के किनारे के पास था। 1983 में (कैलाश जी तब 20 साल के थे) आई बाढ़ में जब घर बह गए तो गाँव 800 मीटर अन्दर की तरफ बसाया गया।

इस नदी को बड़वती गंगा कहते हैं। जब राम लल्ला ओरछा आए थे तो बड़वती ने गंगा को पुकारा और फिर खुद अपनी स्रोत से ओरछा से होते हुए गंगा की तरफ बहने लगी।”

गाय मारना बड़ा पाप है। आवारा गाय की समस्या है लेकिन बाड़े बनाकर हम उनको बाहर रखते हैं। नीलगाय और जंगली सूअर को भी।”

अगला चरण: खिरखण्ड से गोरिया





दिल्ली 6 के दिल में खुलता है चावरी बाज़ार मेट्रो स्टेशन का गेट नम्बर 3। बाहर कदम रखते ही सामने दिखती है, हौज़ काज़ी। किसी ज़माने में आलीशान मस्जिद हुआ करती होगी। वक्त के थपेड़ों ने उसे आज एक खँडहर भर कर दिया है। और बाईं ओर जाती है एक संकरी-सी सड़क। बिजली के तमाम तार उलझे हुए जैसे ऊपर आसमान से लटके हों। सड़क के दोनों तरफ हैं टायर और ट्यूबों की ऊँची दुकानें। इसी गली में कुछ सौ कदमों की दूरी पर है मस्जिद बेगम मुबारक शाह।

अपनी पड़ोसन हौज़ काज़ी की तरह यह भी कभी आलीशान हुआ करती थी। सुना है 2020 में इसका बड़ा गुम्बद कुछ ढह गया है। मगर एक वक्त था, जब यह सुख लाल मस्जिद फूलों की खुशबू और चिड़ियों की चहचहाहट से गुलज़ार थी।

कोई कहता है इस मस्जिद को बेगम मुबारक शाह ने बनवाया है, तो कोई कहता है इसको बनाया है मेजर जनरल सर डेविड औखटरलोनी ने! अब आप सोचेंगे, कि भाई, यह कौन लोग हैं?!

दरअसल यह वो दो हस्तियाँ हैं, जिनकी ज़िन्दगी की कहानी मस्जिद की इस गली के ऊपर टँगे बिजली के उलझे तारों की तरह ही उलझी हुई थी... आपस में गुत्थम-गुत्था!

बात है सन 1777 की। बौस्टन में पला-बढ़ा डेविड औखटरलोनी भर्ती हुआ ईस्ट इंडिया कम्पनी में। 18 वर्ष के इस बाँके जवान को इंग्लैंड से भेज दिया गया सीधा हिन्दूस्तान। यहाँ डेविड औखटरलोनी ने धड़ाधड़ छोटे-बड़े युद्ध लड़े और बेधड़क कामियाबी की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। लेफ्टिनेंट से बना कप्तान, फिर मेजर, और फिर देखते ही देखते, लेफ्टिनेंट कर्नल और भारत भर में घूमता-घामता आ पहुँचा दिल्ली। यहाँ वो ऊँचे पद पर भेजा गया था। इंग्लिस्तान का खास बाशिन्दा – रेज़िडेंट ऑफ़ देहली। साल था 1804।

लूनी अख्तर

वसुंधरा बहुगुणा

फोटो: प्रवीण कुमार

मस्जिद हौज़ काज़ी।

डेविड औखटरलोनी ने दिल्ली में खूब धाक जमाई और सन 1814 में बन गया मेजर जनरल सर डेविड औखटरलोनी। अपने फौजी बल के साथ-साथ मेजर जनरल सर डेविड औखटरलोनी ने अपनाया हिन्दुस्तानी तमीज़ और तहज़ीब को। खानपान, पहनावा, गाने बजाने का शौक, पान-मुशायरे का शौक, वगैरह-वगैरह।

और तो और, पतलून-कमीज़ छोड़, पहनने लगा जामा जोड़ा! अपने सफ़ेद जामे जोड़े में साफ़ा पहने जब डेविड औखटरलोनी गली में निकलता, तो कोई बा अदब आदाब करता, और कोई पीठ पीछे फिकरे कसता! कि हाय हाय, देखो तो ज़रा इस बेअक्ल अँग्रेज़ी अफसर को... यह पगला गया है क्या! और वहाँ इंग्लैंड में डेविड औखटरलोनी को भेजने वाली ईस्ट इंडिया कम्पनी का खून खौलता! “कम्बखत! हमने इसे भेजा कारोबार करने, वहाँ राज चलाने में हमारी मदद करने। मगर इसको देखो, लगा है जोड़ा जामा पहन, मुँह में पान के बीड़े दबाए मुस्कराता हुआ इधर-उधर फिरने में! और चमड़ी इतनी मोटी, कि लाख बोल-कोस लो, पर मजाल जो ये टस से मस हो!” शहर के बाकी अँग्रेज़ अफसर उसे लूनी, उर्फ़, सरफिरा बुलाते थे! और वहीं दिल्ली 6 में लोग डेविड औखटरलोनी को कमाल लूनी अख़्तर कहने लगे थे! उन्होंने सोचा, “सभी अँग्रेज़ उन्हें लूनी लूनी कहते हैं, तो हम इनको सम्मान और प्यार से लूनी अख़्तर कह देते हैं!” क्या करते, अँग्रेज़ी में हाथ थोड़ा तंग जो था!

अब ये जो लूनी अख़्तर थे, यह थे बड़े कमाल के। इनकी बड़ी-सी हवेली में एक बड़ा-सा हरमखाना भी था। और उसमें रहती थीं इनकी 13 बेगम... और उन सब में सबसे खूबसूरत थीं, पूना की चम्पा बाई जिनको लोगों ने प्यार से कहना शुरू किया जर्नेली बेगम...।

बूझो क्यों!

अरे, क्योंकि वो जरनैल, यानी कि जनरल डेविड औखटरलोनी की बेगम जो थीं! क्या करते, आप तो जानते हैं कि अँग्रेज़ी में लोगों का हाथ थोड़ा तंग था!

अब जो ये जर्नेली बेगम थीं, यह थीं तो उम्र में जरनैल साहब यानी लूनी अख़्तर से काफी छोटीं, और उनकी बाकी बारह बेगमों में भी सबसे छोटी। मगर वो थीं बड़ी दमदार और बेबाक! जो चाहतीं, कर डालतीं, या तो करवा लेतीं लूनी अख़्तर से!

और इतिहास गवाह है कि दमदार इन्सान, और वो भी औरत, का ज़माना अक्सर दुश्मन होता है। तो ज़माना न जाने क्या-क्या बोल-बालकर उस पर कीचड़ उछालता। बाकी की बारह बेगम उनकी चुगलियाँ करती न थकतीं। उनका नाम खराब करतीं। और तो और, ईस्ट इंडिया कम्पनी और मुगल सल्तनत, दोनों को ही जर्नेली बेगम रत्ती भर न भातीं! हो सकता है वो दबंग युवती सत्ता का शौक रखती हों, या फिर वाकई लूनी अख़्तर का राज-काज में हाथ बँटाती हों। कई कहानियाँ हैं, और कई हैं किस्से, जिन्हें मानो, वो ही सच्चे!

मगर सौ बात की एक बात : लूनी अख़्तर तो बस अपनी जर्नेली बेगम पर जान छिड़कते थे!

समय बीता। एक बार की बात है कि कुछ बागियों ने भरतपुर राज्य पर धावा बोल दिया। डेविड औखटरलोनी ने फौरन कमान सँभाली और वहाँ के नन्हे राजकुमार की मदद को निकल पड़े। मगर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने ही उनको धोखा दे दिया।



उनका फरमान रद्द कर दिया और उनको मेरठ भेज दिया। इस दुख से कि बड़ा और काबिल अफसर होने के बावजूद उनको अपनों ने ही नक्कारा, अख्तर लूनी चल बसे। यूँ तो उन्होंने दिल्ली के शाहजहानाबाद में अपना मकबरा अपने मरने से पहले ही बनवा दिया था, मगर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। लूनी अख्तर ने मेरठ में आखिरी साँसें लीं और वहीं दफना दिए गए।

आइए, अब हम बेगम मुबारक शाह मस्जिद पर वापस चलें। कहते हैं, जर्नेली बेगम ने लूनी अख्तर की याद में ये मस्जिद बनवानी शुरू करी। खास किस्म के सुर्ख लाल पत्थर मँगवाए, मिस्त्री मज़दूर काम पर लगे। और शुरू हो गया मस्जिद का निर्माण! तीन शानदार गुम्बदा। दरवाज़ों पर नक्काशी। अन्दर तमाम आले और ताक रोशनदान, खिड़कियाँ, और झरोखे। ऊपर टाँगे गए कई नायाब झूमर। बाहर बाग-बगीचे। उनमें अनोखे

पेड़-पौधे, कुछ चश्मे-झरने और बन खड़ी हुई एक शानदार हवेली और उसमें ये मस्जिद। इतना सब करने में ही जर्नेली बेगम का काफी खर्चा हो गया होगा। उधर अँग्रेज़ों और मुगली सल्तनत ने उनको पैसा देना बन्द कर दिया तो बाकी का बचा काम सब आनन-फानन में हुआ होगा। ये आप वहाँ जाकर देख सकते हैं। कोई कहता है कि जर्नेली बेगम ने ये हवेली और मस्जिद बनवाई, तो कोई कहता है अख्तर लूनी ने। कई कहानियाँ हैं, कई हैं किस्से। जिन्हें मानो, वो ही सच्चे!

बहरहाल, कहते हैं दिल्ली शहर के कई मुशायरे इसी हवेली में हुआ करते थे। गौताकिये, खासदान, पानदान, पीकदान, हुक्के, फर्श पर बिछी सफेद चाँदनी... और जर्नेली बेगम समेत बैठे दिल्ली और आस-पड़ोस के शहरों के तमाम शायर। शमा-ए-महफिल देर रात तक जली रहती। कहते हैं, दिल्ली का एक आखिरी मुशायरा, जिसमें खुद मिर्जा गालिब हाज़िर थे, यहीं पर हुआ था। फज़ की अज़ान तक मुशायरा चला और फिर सन 1857 के चलते सैनिकों के आने से कुछ पल पहले ही खतम हुआ।



बेगम मुबारक शाह मस्जिद।



1820, दिल्ली के एक अज्ञात चित्रकार द्वारा बनाया गया, डेविड ओख्तरलोनी का नाच देखते हुए भारतीय पौशाक में चित्र।



इधर देश भर में क्रान्ति की मशाल दहक रही थी। उधर जर्नेली बेगम का नाम और पता मिटता चला गया। एक-एक पाई को मोहताज वो अपने अख्तर लूनी से जुदा हो चुकी थीं और फिर न जाने किस गुमनामी में खो गईं। कब, किधर, कैसे उनका अन्त हुआ, क्या मालूम? और जहाँ तक अख्तर लूनी की बात है, तो बहादुर शाह ज़फर के ये शब्द उन पर खरे उतरते हैं: *कितना है बदनसीब 'ज़फर' दफन के लिए, दो गज़ ज़मीन भी न मिली, कू-ए-यार में*

दिल्ली से बेहद प्यार करने वाला लूनी अख्तर दिल्ली को दिल ही में लिए एक लम्बी नींद सो चुका था।



जून के अंक में हमने क्यों-क्यों में तुमसे पूछा था कि मध्य और उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में गर्मियों में पतझड़ होता है। पहाड़ी इलाकों में ठण्ड के मौसम में। ऐसा क्यों? तुम्हारे जवाबों को पढ़कर सुशील जोशी ने भी अपना जवाब लिखा है।

तुम लोगों ने इस सवाल के जो जवाब दिए हैं या देने की कोशिश की है वह मजेदार हैं। यह तो साफ दिखता है कि कुछ पेड़-पौधे, झाड़ियाँ ऐसी हैं जिनके पत्ते साल में किसी समय एक साथ टपक जाते हैं और वह पूरी तरह पत्ती-रहित हो जाता है। दूसरी ओर कई पेड़-पौधे, झाड़ियाँ ऐसी होती हैं जो साल भर हरी बनी रहती हैं। लेकिन इनकी पत्तियाँ भी झड़ती हैं; अन्तर केवल इतना है कि इनकी पत्तियाँ एक साथ नहीं, बल्कि एक-एक, दो-दो करके गिरती रहती हैं और नई पत्तियाँ आती रहती हैं। इसलिए ये सदाबहार कहे जाते हैं।

सवाल यह है कि मध्य भारत के मैदानी इलाकों में गर्मियों में और पहाड़ी इलाकों में ठण्ड के मौसम में पतझड़ क्यों होता है।

पत्तियों का क्या काम?

सबसे पहले देखा जाए कि पेड़ पर पत्तियाँ करती क्या हैं। शायद तुम्हें पता ही होगा कि पत्तियाँ प्रकाश संश्लेषण नाम की क्रिया के द्वारा भोजन-निर्माण करती हैं। प्रकाश संश्लेषण में कार्बन डाईऑक्साइड नामक गैस और पानी की क्रिया होती है और कार्बोहाइड्रेट बनता है। यानी पत्तियाँ ही वनस्पतियों को ज़िन्दा रखती हैं, उन्हें बढ़ने के लिए, फूलने-फलने के लिए सामग्री उपलब्ध करवाती हैं।

पेड़ से पत्तियाँ झड़ती क्यों हैं?

अब सवाल उठता है कि कुछ पौधे ऐसे महत्वपूर्ण अंग को क्यों गँवा देते हैं। ऊपर

हमने बात की कि सारे पेड़-पौधे पुरानी पत्तियाँ गिराकर नई पत्तियाँ उगाते रहते हैं। तो ऐसा लगता कि पुरानी पड़ने पर पत्ती अपना काम ठीक से नहीं कर पाती होगी, तो उसे गिराकर नई पत्ती उगाने में पौधे का फायदा होता होगा।

पत्तियों के झड़ने में मौसम का क्या असर?

गर्मियों में...

अब देखते हैं क्यों पतझड़ अलग-अलग मौसम में होता है। यह तो जानी-मानी बात है कि पौधों के भोजन बनाने के लिए कार्बन डाईऑक्साइड हवा से मिलती है। पत्तियों में ऐसे छिद्र (स्टोमेटा) होते हैं जिनमें से होकर हवा अन्दर पहुँचती है। इस हवा में से पत्तियाँ कार्बन डाईऑक्साइड ले लेती हैं और बाकी हवा वापिस बाहर चली जाती है। प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में जो ऑक्सीजन बनती है, वह भी बाहर चली जाती है। लेकिन इसके साथ-साथ एक बात और होती है।

पत्तियों में जो पानी होता है वह भी भाप बनकर उड़ता रहता है। दिन में पत्तियों के छिद्र खुले रहते हैं ताकि हवा अन्दर पहुँच सके। लेकिन छिद्र खुले रहने पर पानी भी निकलता रहता है। सामान्य मौसम में जड़ों से जो पानी मिलता है और पत्तियों से जो पानी उड़ता है उनमें सन्तुलन रहता है। लेकिन जब गर्मियों में तापमान बहुत अधिक हो जाए, तो पत्तियों से बहुत पानी उड़ेगा जबकि जड़ों द्वारा ज़मीन से कम पानी मिलेगा।

इसलिए कहते हैं कि ऐसे मौसम में पानी बचाने के लिए पत्तियाँ न होना ही बेहतर है।

सर्दियों में...

तो फिर सवाल उठ जाता है कि पहाड़ी इलाकों में पतझड़ क्यों होता है क्योंकि वहाँ तो इतनी भीषण गर्मी पड़ती नहीं।



इस सवाल के जवाब में पत्तियों की एक और खासियत पर ध्यान देना पड़ेगा।

पेड़-पौधों पर पत्तियाँ सबसे फैलाव वाला अंग होता है। चौड़ी, चपटी पत्तियों का क्षेत्रफल बहुत अधिक होता है — शेष पेड़ की तुलना में कई गुना। इसका सम्बन्ध पहाड़ी इलाकों में पतझड़ से है, ऐसा कहते हैं। यह तो तुम जानते ही होगे कि ऊँचे पहाड़ी इलाकों में तापमान बहुत कम हो जाता है और बर्फ भी गिरती है। यदि पत्तियाँ सलामत हों, तो उन पर यह बर्फ जमा हो जाएगी और पेड़ का वज़न खूब बढ़ जाएगा। इसलिए ऐसे इलाकों में पत्तियों से मुक्ति पाना एक तरीका है खुद को बचाने का।

एक बात और ध्यान देने की है कि यदि तापमान बहुत कम हो जाए, तो कोशिकाओं के अन्दर पानी बर्फ बनने लगता है। तुम्हें शायद पता होगा कि बर्फ बनते समय पानी का आयतन बढ़ता है। इस तरह बढ़ते आयतन के दबाव से कोशिकाएँ फट सकती हैं, जो एक और खतरा है। और एक बात याद

रखने की है। जाड़े के दिनों में वैसे भी धूप कम मिलेगी, तो पत्तियों में होने वाली प्रकाश संश्लेषण की क्रिया तो धीमी पड़ जाएगी। ऐसे में पत्तियाँ निट्टली बैठी रहेंगी। तो उनका झड़ जाना ही बेहतर है, ताकि सही मौसम आने पर उनकी जगह नई पत्तियाँ ले सकें।

वैसे कुछ पेड़ों ने दूसरा तरीका भी अपनाया है। हमने देखा कि पत्तियाँ चौड़ी होंगी तो उनका क्षेत्रफल ज़्यादा होगा और उन पर ज़्यादा बर्फ जमेगी। इसके जवाब में कुछ पेड़ों में पत्तियाँ एकदम पतली-पतली (सुई जैसी) होती हैं। देखा गया है कि पहाड़ी इलाके के इन पेड़ों में पतझड़ नहीं होता।

एक खूबसूरत घटना

पतझड़ एक खूबसूरत और रोचक घटना है। ऐसा नहीं है कि हवा के झोंके से पत्ती टपक जाती है। पेड़-पौधों में ऐसा कुछ होता है कि पत्ती में जो भी सामग्री है, पहले उसे शाखा में खींच लिया जाता। इसके बाद, जहाँ पत्ती टहनी से जुड़ी होती है वहाँ पतली कोशिकाएँ बनने लगती हैं। इस वजह से टहनी और पत्ती के जोड़ पर एक कमज़ोर परत बन जाती है — इसे विलगन परत कहते हैं। ऐसी पत्ती को हल्का-सा झटका लगे तो वह गिर जाती है। पतझड़ का मतलब पत्ती का मुरझाना नहीं होता — पतझड़ के पहले बहुत तैयारी करते हैं पेड़-पौधे पत्ती की विदाई के लिए।





क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

तुम्हारे हिसाब से तुम्हें मिली सबसे
बुरी सज़ा कौन-सी थी, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे
हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते
हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें
अपने जवाब लिख भेजना।

अगले अंक के लिए सवाल है—
तुमने अक्सर लोगों को
कहते हुए सुना होगा कि
आजकल भलाई का ज़माना
नहीं है। तुम्हारी राय में
क्या वे सही कह रहे हैं?
हाँ तो क्यों और नहीं तो
क्यों नहीं?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/
कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.
in पर ईमेल कर सकते हो या फिर
9753011077 पर वॉट्सऐप भी कर
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते
हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

जब मैं छत पर खेल रहा था तो मैंने एक कबूतर को मारा। तब मेरी मम्मी
ने भी मुझे बहुत मारा। तो मुझे बहुत बुरा लगा।

आयुष, पाँचवीं, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मेरे घर के पास एक बगीचा था। उसमें बहुत सारे पेड़-पौधे और सुन्दर-
सुन्दर फूल थे। वो बगीचा एक आंटी का था। जो भी बच्चा फूल लेने
छुपकर जाता था तो वह उस बच्चे को तब तक नहीं जाने देती थीं जब
तक कि उसके मम्मी या पापा न आ जाएँ। एक बार मैं शाम को वहाँ फूल
लेने गई। तब मुझे नहीं पता था कि वो पकड़ लेती हैं। मैं गई तो उन्होंने
मुझे पकड़ लिया और डाँटा। फिर उन्होंने कहा तेरी मम्मी को बताऊँगी।
मैं डरकर रोने लगी। फिर मैं भाग गई। उन्होंने मेरी मम्मी को नहीं बताया।
लेकिन फिर मैं कभी वहाँ नहीं गई।

एकता, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

जब मम्मी बात नहीं करती हैं तो वह मेरे लिए सबसे बड़ी सज़ा होती है।
माही नागेश्वर, छठवीं, होली एंजल स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे पैसे मुँह में लेने की आदत थी। माँ-बाबा ने मुझे कई बार डाँटा भी
था, पर मैं नहीं समझ पा रही थी। एक दिन एक रुपए का सिक्का मुँह में
लेकर मैं खेल रही थी। अचानक वो मेरे गले में अटक गया। मैं चिल्लाने
लगी। आसपास के लोग जमा हो गए। मेरी पीठ थपथपाने की सलाह लोग
देने लगे। माँ ने कोशिश की, पर नहीं हो रहा था कुछ भी। फिर बाबा ने
ज़ोर-ज़ोर से मुझे पीठ पर गुद्दे मारे। उलटी हो गई मुझे और सिक्का
बाहर निकल गया। बाप रे, वो दिन और वो मार मैं ज़िन्दगी भर नहीं भूल
सकती। अब मैं कभी पैसे तो क्या कोई भी चीज़ मुँह में नहीं डालूँगी। वो
मार मेरे भले के लिए ही थी, पर बहुत ज़्यादा खतरनाक थी। जीवन में
किसी को ऐसे गुद्दे ना मिलें।

तनवी, छठवीं, जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला, लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

सालाना परीक्षा थी। मैडम पेपर समझा रही थीं। मैडम की मेज़ से एक
कागज़ उड़कर आँगन में चला गया। मैं उसे उठाने दौड़ी। मैडम को लगा
कि मेरा ध्यान पेपर में नहीं है। मैडम बाहर गई। कंडाली (बिच्छू घास)
तोड़कर लाई और मेरे मुँह में झपका दी। कई दिनों तक झनझनाहट रही।
तब मैं चौथी में पढ़ती थी।

खुशबू रमोला, दसवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। पापा नया मोबाइल खरीदे थे। उन्होंने मुझे मोबाइल चलाने से मना किया था। एक दिन पापा सो रहे थे। मैं सुबह-सुबह उठकर अपनी छोटी बहन के साथ खेलने लगी। वो रोने लगी तो मैंने उसे मोबाइल में कार्टून देखने के लिए दे दिया। मेरी छोटी बहन ने अचानक से मोबाइल पटक दिया जिससे वो फूट गया। मैंने डर के कारण उसे बेड के नीचे रख दिया। जब पापा उठे तो उन्होंने मोबाइल के बारे में पूछा। मैंने कुछ नहीं बताया। मोबाइल की घण्टी की आवाज़ से उन्होंने मोबाइल ढूँढ लिया और वो समझ गए कि यह सब मेरी गलती है। उन्होंने मुझे बहुत डाँटा। मैंने दोपहर तक खाना नहीं खाया। शाम को पापा लौटे तो उन्होंने मुझे समझाया कि मोबाइल बनवाने में जितना खर्च आएगा उतने से कई दिन तक घर का साग-सब्जी का खर्च चल सकता था।

दिया भट्ट, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी,
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

A drawing of two boys in school uniforms standing in front of a green chalkboard. Both boys are smiling and have their hands raised in the air, as if they want to answer a question or are excited. They are wearing white shirts, blue ties, and blue shoes. The chalkboard behind them is a solid green color.

एक दिन मैंने दिन भर खेला और पढ़ा। बिल्कुल
बुझी की, कसाले में मेरी समझ ने मुझे उड़ सी मारा।
वह मुझे आज तक की बहुत बुरी सजा लगती।

श्रेयस आडके, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान,
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: खुशी, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं मेरे चाचा के गाँव आया था। हम पाँच-छह दिन वहाँ रुके थे। दूसरे दिन मैं मेरे दोस्त के साथ क्रिकेट खेल रहा था। तभी गलती से मेरा धक्का उसको लग गया और वह गिर गया। उसके हाथ में चोट लगी। वो रोने लगा। उसके घर वाले आए और मुझे डाँटने लगे। मैंने उनसे माफी माँगी और घर चला आया। और यह सारी बात घर वालों को बता दिया। वह बोले सँभलकर खेलो।

अगले दिन फिर से हम लोग क्रिकेट खेलने लगे सभी मेरी सबसे बड़ी सज़ा मिली। बॉल नीचे गिर गई। मेरा दोस्त मेरे पीछे था। मैंने बैट ज़ोर-से घुमाया और उसके सिर पर लग गई। उसके सिर से खून आने लगा। वह ज़ोर-से चिल्लाया। उसके घर वाले दौड़ते-दौड़ते बाहर आ गए। उसको डॉक्टर के पास ले गए। मेरे घर वालों को पता चल गया। उन्होंने मुझे बहुत डाँटा। उसके घरवालों ने भी बहुत डाँटा। तभी मुझको पता चला कि घर वालों की सुनना चाहिए। मेरे पापा ने बैट तोड़ दिया। मेरे पापा मुझ पर बहुत गुस्सा थे। मुझको उन्होंने अगले साल गाँव नहीं भेजा। मुझको बहुत दुख हुआ।

देवेन्द्र थावड़े, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक दिन हमारे यहाँ धान बैठाया जा रहा था। तभी पापा बोले, “बेटा घर से बिस्किट और पानी ले आओ।” मैं खेत से बाहर आई। पापा ने फिर कहा, “बेटा, मेरी शर्ट भी ले जाओ।” मैंने पापा की शर्ट उठाई और घर की ओर चल दी। तभी पापा की शर्ट से मोबाइल नीचे गिर गया और मैं जान भी नहीं पाई। घर पहुँचकर देखा तो शर्ट में मोबाइल था ही नहीं। मैंने मोबाइल को बहुत ढूँढा पर कहीं नहीं मिला। पापा से मुझे बहुत डाँट पड़ी।

करिश्मा सोनकर, सातवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

जब मैं छठवीं में पढ़ती थी तो एक दिन मैं अपनी अँग्रेज़ी की किताब ले जाना भूल गई। मैंने सोचा कि अँग्रेज़ी के अध्यापक मुझे डाँटेंगे इसलिए मैंने अपनी दोस्त की किताब बिना पूछे ले ली। जब अध्यापक कक्षा में आए तो उन्होंने पूछा कि सब बच्चे किताब लाए हैं। मैंने हाँ कह दिया लेकिन मेरी सहेली किताब ढूँढती रह गई। उसने अध्यापक को बताया कि मेरी किताब खो गई है। अध्यापक ने उसे कुछ नहीं कहा। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा, “यह तुम्हारी किताब है?” मुझे डर तो लग रहा था लेकिन मैंने फिर से झूठ बोला और हाँ कह दिया। तो, सर ने मुझे कहा कि उन्होंने मुझे किताब लेते हुए देख लिया था। उस दिन सर हमारे लिए उपहार लाए थे। सर ने वो उपहार सब को दिया। लेकिन मुझे नहीं दिया। मैंने कहा कि आपने सब को दिया, मुझे क्यों नहीं दिया। तब सर ने कहा कि अगर तुम झूठ ना बोलतीं तो अवश्य ही मैं ये किताब तुम्हें देता। मुझे लगा कि यही मेरी सबसे बुरी सज़ा है।

कोमल बोरा, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

जब मैं पाँचवीं कक्षा में थी तो मुझे हाथ में पहनने वाली घड़ी चाहिए थी। पापा ने मुझे पूछा कि तुम्हें अंक वाली घड़ी चाहिए या टचस्क्रीन चाहिए। तो मैंने बोला कि अभी अंक वाली दिला दो। फिर स्क्रीन टच बाद में दिला देना। फिर पापा बोले कि 12 जनवरी को तुम्हारे जन्मदिन को वो दिला दूँगा। मैं बहुत खुश हुई। मेरे हाथ में एक नई-सी घड़ी थी। उसमें तितलियाँ थीं। कुछ महीनों बाद वो गुम गई। मैं बहुत डर गई थी। पापा ने पूछा कि घड़ी कहाँ है। उनको मैंने बताया। पापा बहुत गुस्से में थे। फिर पापा ने बोला तुम्हें अब कभी भी घड़ी नहीं मिलेगी। मैं बहुत नाराज़ हुई। अब मेरी स्क्रीन टच वॉच भी चली गई। काश मैं मेरी घड़ी का ख्याल रखती।

संस्कृति मुलिक, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र



चित्र: मुकुंद आडकर, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

ठण्ड का मौसम था। हम लोग छत पर बैठे थे। सुनहरी धूप खिली हुई थी। मेरी माँ और मेरी चाची छोटे बच्चों की तेल मालिश कर रही थीं। मेरी माँ ने मुझसे कहा कि छोटे भाई के कपड़े ले आऊँ। मैं कोठे से उतरकर नीचे चली गई। चाचा का लड़का खेल रहा था। उसके पास 20 रुपए थे। वह उसने कहीं फेंक दिए। चाची उससे रुपए के लिए पूछ रही थीं। तभी मैं कपड़े लेकर लौटी। उन्हें लगा कि रुपए मैंने लिए हैं और नीचे कहीं छिपाकर आई हूँ। तो वो मुझ से बोलीं कि सच-सच बताओ रुपए चुराकर कहाँ रखी हो। इस पर मम्मी को भी गुस्सा आ गया। उन्होंने भाई को गोद से उतारा और उसे कपड़े पहनाए बगैर मुझे चोटी पकड़कर मारने लगीं। मेरी पीठ में बरती बन गई। मैं बहुत रोई और बताती रही कि मैंने चोरी नहीं की है। जब सब लोग नीचे उतरे तो उन्हें बीस रुपए आँगन में पड़े मिले।

सलोनी यादव, सातवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरी मैडम मुझे जो नहीं आता है वही चीज़ मुझे जानबूझकर सबके सामने करवाती हैं। मेरे लिए यही बुरी सज़ा है।

मानव प्रजापति, छठवीं, होली एंजल स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

पहाड़ में साइकिल सीखना टेढ़ा काम है। साइकिल सीख रहा था तो सामने से जीप आ गई। बाल-बाल बचा। चोटें आईं। घर आया तो पिताजी ने खूब मारा। बाँस के डण्डे से हुई पिटाई आज भी याद है।

विवेक रावत, नौवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल



मेंढकों की कुछ बातें...

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

मेंढकों के बाहरी कान नहीं होते हैं। आँखों के पीछे टिम्पैनम (झिल्लियाँ) होती हैं, जिनसे वे सुन पाते हैं।



मेंढक मुँह से नहीं चमड़ी से पानी पीते हैं।



ठण्डे इलाकों में रहने वाले मेंढक सर्दियों में सुप्तावस्था में चले जाते हैं। हालाँकि कठोर सर्दी को झेलने के लिए अलास्कन वुड फ्रॉग खुद को फ्रीज कर सकता है!



सारे मेंढक उछलते नहीं हैं। कुछ चलते हैं, कुछ खोदते हैं और कुछ तो जैसे उड़ते भी हैं!



किताबें कुछ कहती हैं...

किताबों की दुनिया में जाने का एक रास्ता है किताबों की समीक्षाएँ। कुछ बच्चों ने अपनी पसन्द की किताबों की समीक्षाएँ हमें भेजीं। इनमें से दो किताबों की समीक्षाएँ हम यहाँ दे रहे हैं। तुमने भी अगर कोई किताब या कोई कहानी-कविता पढ़ी हो और उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहो तो, हमें लिख भेजना। क्या अच्छा लगा और क्या अच्छा नहीं लगा... हम तुमसे सुनना चाहेंगे।



पुस्तक: तोतोचान
लेखक: तेत्सुको कुरोयानागी
चित्र: चिहिरो इवासाकी
प्रकाशक: नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
समीक्षा: श्रयु मने, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे तोतोचान किताब बहुत पसन्द है। इसका मुख्य किरदार तोतोचान नाम की एक लड़की है। तोतोचान स्वभाव से एक चंचल लड़की है।

इस किताब में तोतोचान की स्कूल की मस्ती, स्कूल में स्टेशन मास्टर बनने का उसका सपना ये सब किस्से मज़ेदार हैं। उसका स्कूल जो होता है वह रेल के डिब्बों में होता है – ऐसी कहानियाँ हैं इसमें।

इसकी कहानी एकदम अलग है। जब आप यह किताब पढ़ते हैं तो आपको महसूस होता है कि आप ही तोतोचान हैं। ऐसा लगता है कि आप ही यह सब कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हरेक बच्चे को तोतोचान जैसा स्कूल मिलना चाहिए।

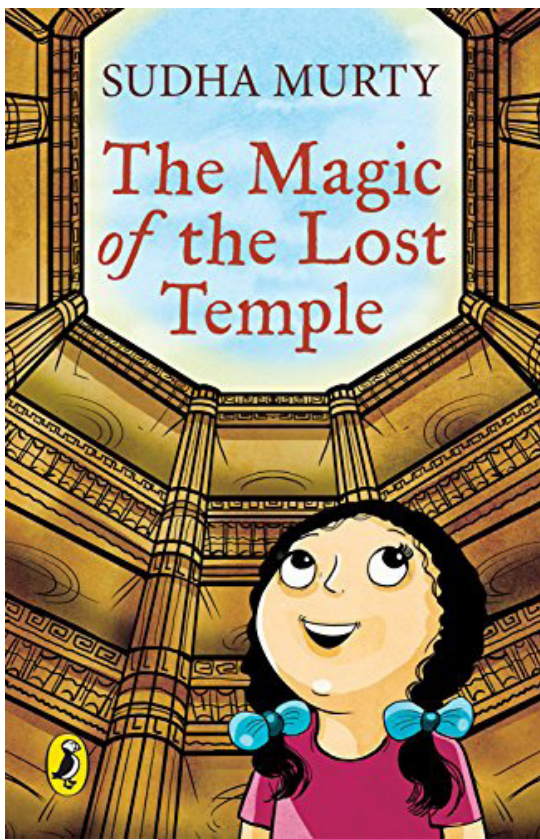
मुझे किताबें पढ़ना बहुत ज़्यादा पसन्द है। हाल ही में मैंने नरेन्द्र दाभोलकर की लिखी किताब *विचार तर कराल* पढ़ी। नरेन्द्र दाभोलकर अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष थे। जैन धर्म में होने वाले बेवजह खर्च और अन्न की बरबादी के बारे में उनका लिखा मुझे पसन्द आया और नरेन्द्र दाभोलकर के सोचने का तरीका भी मुझे सही लगा।

क्यों लोग अन्न की बरबादी करते हैं। उससे अच्छा वह गरीबों में बाँट दें तो उन गरीबों का खाना तो मिलेगा। जो पैसे वह खर्च करते हैं उन्हें अनाथ आश्रम में दान कर दें तो उन बच्चों को खाना, अच्छी शिक्षा, पहनने के लिए अच्छे कपड़े मिलेंगे।

आप भी इस किताब को ज़रूर पढ़ना। आपको बहुत पसन्द आएगी। नरेन्द्र दाभोलकर की बहुत-सी किताबें हमारा मार्गदर्शन करती हैं और वैज्ञानिक तरीके से सोचने के लिए मजबूर करती हैं।



पुस्तक: विचार तर कराल
लेखक: नरेन्द्र दाभोलकर
प्रकाशन: राजहंस प्रकाशन
समीक्षा: प्रचिती दोशी, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र



पुस्तक: द मैजिक ऑफ द लॉस्ट टेंपल
लेखक: सुधा मूर्ति
चित्र: प्रियंकर गुप्ता
प्रकाशक: पफिन बुक्स
समीक्षा: रब्बानी बत्रा, ग्यारह साल

सुधा मूर्ति की एक किताब जो मैंने हाल ही में पढ़ी और जिसे पढ़कर मैं वास्तव में आनन्दित हुई, वह थी *द मैजिक ऑफ द लॉस्ट टेंपल*

यह शहर की एक लड़की अनुष्का के बारे में एक अद्भुत उपन्यास है। अनुष्का अपनी गर्मी की छुट्टियों में एक छोटे-से गाँव में अपनी दादी (सुधा) के घर रहने जाती है। कहानी का सबसे रोमांचक हिस्सा वो है जब गाँव में टहलते हुए वह गाँव के पास जंगल के बीचोंबीच अकस्मात एक रहस्यमयी प्राचीन बावड़ी की खोज कर बैठती है।

इस किताब के बारे में कुछ बातें हैं जो मैं साझा करना चाहूँगी।

- अध्याय एक और पाँच बेहतरीन हैं। पहला अध्याय अनुष्का के परिवार का परिचय देता है जहाँ सुधा लिखती हैं कि अनुष्का के पिता उसकी पढ़ाई को लेकर बहुत सख्त हैं। वे हमेशा चाहते हैं कि अनुष्का हर चीज़ में जीत हासिल करे। और जब वह अपनी कक्षा में 10वीं रैंक पर आ जाती है, तो कैसे वह बहुत परेशान हो जाते हैं।
- अध्याय पाँच मज़ेदार और सुकून देने वाला है जहाँ अनुष्का अपनी दादी के साथ गाँव में समय बिताती है, दादी उसके बालों की मालिश करती हैं। बाद में, वे बगीचे में टहलते हुए पौधों और पेड़ों के बारे में बात करते हैं। वहाँ अनुष्का को विभिन्न पौधों के नाम व काम के बारे में वास्तव में जानने को मिलता है।
- जैसे अनुष्का, उसके सभी दोस्त और गाँववाले बावड़ी को पूरा खोदने में एक-दूसरे की मदद करते हैं, वैसे ही हमें भी हमेशा एक-दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहना चाहिए।
- जैसे अनुष्का नई चीज़ों के प्रति उत्साहित रहती है और साहस से उन्हें स्वीकार करती है, उसी प्रकार हमें जीवन के नए अनुभवों को अपनाना चाहिए।
- अन्त में जब ग्रामीणों को बावड़ी का पता चला तो अनुष्का के पिता ने महसूस किया कि जीवन में जीतने से ज़्यादा ज़रूरी है सीखना। अनुष्का ने स्कूल की तुलना में गाँव में प्रकृति और इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखा।

मुझे सच में पसन्द आया कि कैसे लेखिका ने अपनी बात रखी। और इस पुस्तक को मज़ेदार, पढ़ने में आसान और वास्तविक जीवन से सम्बन्धित होने के बावजूद काल्पनिक बनाया। यदि आप एक ऐसी पुस्तक की तलाश में हैं जो रहस्यपूर्ण, मज़ेदार और सुकून देने वाली हो, तो यह पुस्तक आपके लिए है। ज़रूर पढ़ें।



कैलेंडर के साथ
मज़ेदार गतिविधियाँ

अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री



गर्मियों की छुट्टियाँ खतम होने के कुछ दिन बाद...

गणित तूँ
मज़ेदार



गर्मियों की छुट्टियों में मैंने खूब मज़े किए। पर तेरे साथ गणित पर चर्चा करने को मिस किया।



हाँ, मैंने भी मिस किया। पर मेरे पास ना तेरे लिए एक खज़ाना है।

अच्छा, पर तू अपने हाथ में यह पुराना कैलेंडर क्यों लाया है?



इसी में तो है हमारा खज़ाना। मेरी कज़िन किरण ने इसे मुझे दिया है। उसका कहना है कि यह सिर्फ़ कैलेंडर नहीं है, बल्कि इसमें गणित की कई मज़ेदार गतिविधियाँ छिपी हैं।

तो समय बरबाद मत कर और जल्दी से मुझे इसके बारे में बता।



तो चल इस कैलेंडर में जनवरी, 2022 का महीना देखते हैं। इसकी किसी भी एक पंक्ति की किन्हीं भी तीन संख्याओं को ले।

JANUARY 2022						
Su	M	Tu	W	Th	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

अब इन संख्याओं को जोड़। क्या मिला?

$$9 + 10 + 11 = 30$$

अब कुछ और संख्याओं के साथ यही चीज़ करके देख। क्या कोई पैटर्न मिला?

$1 + 2 + 3 = 6$,
 $5 + 6 + 7 = 18$,
 $27 + 28 + 29 = 84$.
 लगता है ऐसी किन्हीं भी तीन संख्याओं को जोड़ने पर योगफल एक सम संख्या होती है।
 ऐसा ही है क्या?

कुछ और संख्याओं के साथ करके देख। जैसे कि 4, 5 और 6।

$4 + 5 + 6 = 15$...
 ये तो सम संख्या नहीं है। यानी कि ये पैटर्न तो नहीं है कि ऐसी तीन संख्याओं को जोड़ने पर योगफल सम संख्या ही होती है। पर रुक, मुझे एक अलग पैटर्न नज़र आ रहा है।

15, 5 का तीन गुना है।
 30, 10 का तीन गुना है।
 6, 3 का दो गुना है।
 तो, ऐसी किन्हीं भी तीन संख्याओं का योगफल बीच वाली संख्या का तीन गुना होता है।

बढ़िया!
 चल, कुछ और पैटर्न ढूँढते हैं।

रुक, पहले मुझे ये पता करना है कि ऐसा होता क्यों है।

पहली संख्या बीच की संख्या से 1 कम है और तीसरी संख्या बीच की संख्या से 1 ज्यादा है। यह 1 कम और 1 ज्यादा आपस में कट जाएंगे और हमें बीच वाली संख्या की तीन गुनी संख्या मिलेगी।



चल, इसे लिखकर देखते हैं:

$$\begin{aligned} &\text{बीच की संख्या} - 1 \\ &+ \text{बीच की संख्या} \\ &+ \text{बीच की संख्या} + 1 \\ &= 3 \times \text{बीच की संख्या} \end{aligned}$$

सही!



ऐसा लगता तो है कि ये पैटर्न हमेशा काम करता है। जैसे कि:

$$4 + 11 = 15$$

$$5 + 12 = 17$$

$$17 - 15 = 2$$

हाँ, पैटर्न यही है, लेकिन क्यों?

चल, अब और पैटर्न खोजते हैं।

JANUARY 2022						
Su	M	Tu	W	Th	F	S
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

अब 2×2 के चौकोर बनाकर उसमें लिखी संख्याओं को खड़े में जोड़ते हैं।

$$2 + 9 = 11$$

$$3 + 10 = 13$$

और

$$13 - 11 = 2$$

क्या ये कोई पैटर्न है?

ओके।

देख, ऊपर की पंक्ति में दूसरी संख्या पहली संख्या से 1 ज्यादा है। जैसे कि 5, 4 से 1 ज्यादा हुआ यानी कि $4 + 1 = 5$ हुआ। यही चीज़ नीचे वाली पंक्ति में भी होती है। यानी कि $11 + 1 = 12$ हुआ। इसलिए जब हम $5 + 12$ करते हैं तो इनका योगफल $4 + 11$ के योगफल से 2 ज्यादा होता है।

ओह! मैं इसे देखने से चूक कैसे गई।

खैर, कोई बात नहीं। चल, अब आड़े में लिखी संख्याओं को जोड़कर देखते हैं।

2	3
9	10

11	12
18	19

20	21
26	27

2	3
9	10

$$2 + 3 = 5$$

$$9 + 10 = 19$$

11	12
18	19

$$11 + 12 = 23$$

$$18 + 19 = 37$$

19	20
26	27

$$19 + 20 = 39$$

$$26 + 27 = 53$$

$$19 - 5 = 14$$

$$37 - 23 = 14$$

$$53 - 39 = 14$$

इन सभी के बीच का अन्तर 14 है।

ओह! एक और पैटर्न, लेकिन...

...क्यों?

यहाँ पर भी दूसरी संख्या पहली संख्या से 1 ज्यादा है। अगली पंक्ति में भी दूसरी संख्या पहली संख्या से 1 ज्यादा है। तो फिर 14 क्यों?

वही तो! 14 क्यों?

पता चल गया!

!!!!

देख, चूँकि यह एक कैलेंडर है और हरेक पंक्ति एक हफ्ते की तारीखों को दिखाती है, इसलिए हर पंक्ति में 7 संख्याएँ हैं। और इसीलिए दूसरी पंक्ति की पहली संख्या पहली पंक्ति की पहली संख्या से 7 ज्यादा है। सही है ना?

इसी तरह दूसरी पंक्ति की दूसरी संख्या भी पहली पंक्ति की दूसरी संख्या से 7 ज्यादा है।

सही है। और इसी कारण से नीचे की पंक्ति का योगफल ऊपर की पंक्ति के योगफल से 14 ज्यादा है।

ऊपरी पंक्ति की पहली संख्या
निचली पंक्ति की पहली संख्या

2	3
9	10

2	3
9	10

ऊपरी पंक्ति की दूसरी संख्या
निचली पंक्ति की दूसरी संख्या

जब तक सायरा और मिहिर अपनी इस खोज का जश्न मना रहे हैं तब तक क्या तुम पता करना चाहोगे कि यदि हम कैलेंडर पर बने 2 x 2 के चौकोर के विकर्णों (diagonally) में लिखी संख्याओं को जोड़ें तो क्या होगा?



2	3
9	10

चल, किसी और महीने को लेकर देखते हैं।



मार्च में
देखें?



MARCH 2022						
Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

इस बार 3 x 3 का चौकोर लेते हैं।



MARCH 2022						
Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

ओके। तो, पहले कॉलम की तीनों संख्याओं का योगफल दूसरे कॉलम की संख्याओं के योगफल से 3 और तीसरे कॉलम की संख्याओं के योगफल से 6 कम होगा।



रुक, करके देखता हूँ...
 $14 + 21 + 28 = 63$
 $15 + 22 + 29 = 66$
 $16 + 23 + 30 = 69$



तूने ठीक कहा।
और मुझे पता है कि
ऐसा क्यों होता है।



क्या तुम सायरा और मिहिर की बात से सहमत हो? अगर हाँ तो हमें लिखना कि क्यों और अगर सहमत नहीं हो तो भी लिखना कि क्यों सहमत नहीं हो।

अब बता, यदि मैं पंक्तियों में लिखी संख्या को जोड़ूँ तो क्या होगा?



MARCH 2022

Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

$14 + 15 + 16 = 45$,
 $21 + 22 + 23 = 66...$
 रुक, मुझे थोड़ा सोचने दे।



2 x 2 के चौकोर में विकर्णों में कुछ अच्छे पैटर्न देखने को मिले थे। 3 x 3 के चौकोर के विकर्णों के बारे में तुझे क्या लगता है?



MARCH 2022

Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

कुछ और चित्र बनाते हैं और ऐसे कई और पैटर्नों के बारे में पता करने की कोशिश करते हैं।



MARCH 2022

Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

MARCH 2022

Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अच्छा, तू चित्र बना। तब तक मैं तुझे एक और पैटर्न के लिए एक आखिरी क्लू देता हूँ। 2 x 2 के इस चौकोर के विकर्णों में लिखी संख्याओं के गुण के बारे में सोच।

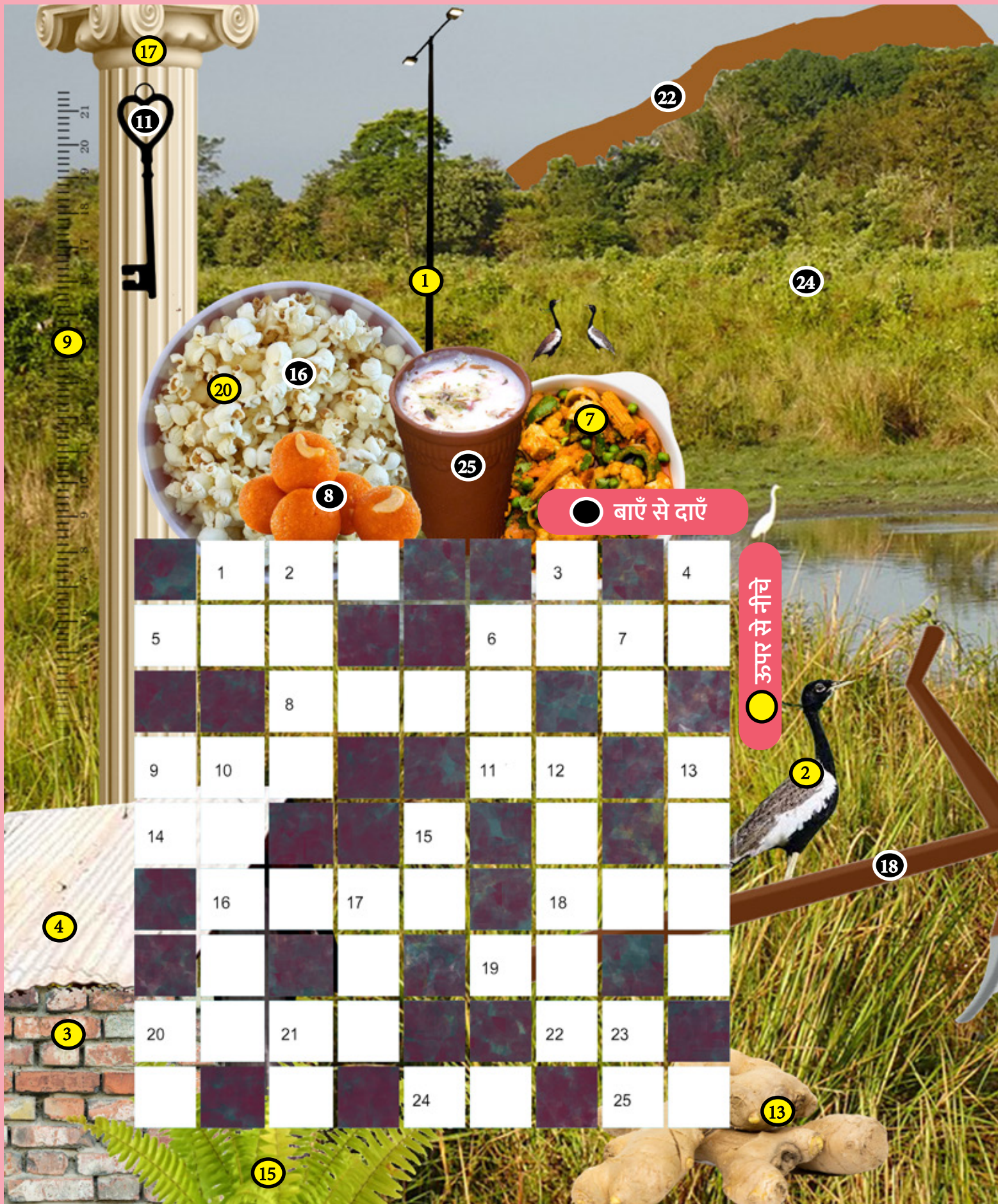


MARCH 2022

Su	M	Tu	W	Th	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		



मिहिर ने जिस पैटर्न के लिए क्लू दिया है क्या तुम उसे खोज पाए? अगर हाँ तो हमें इसके बारे में लिखना। इसके अलावा तुमने कैलेंडर में जो भी और पैटर्न खोजे हों उनके बारे में भी ज़रूर लिखना।



17

11

22

24

1

9

20

16

25

7

8

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

2

18

4

3

13

15

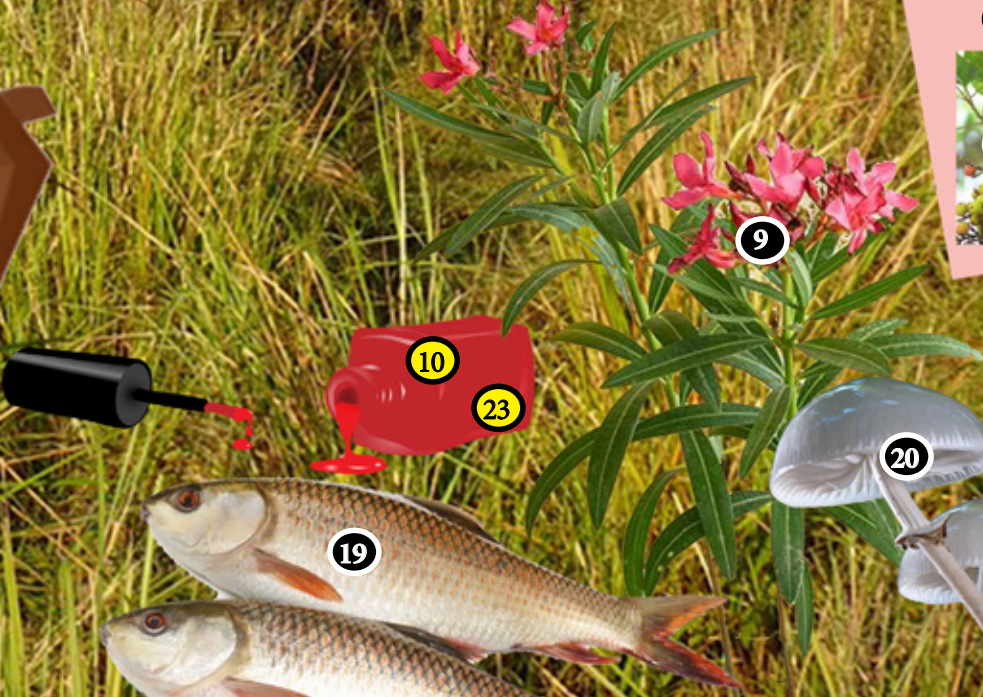
दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो।

8						9		
	9	3	2	8		1	4	
	1	2	6	4	9	7	3	
9	5		3	7			1	6
3	6		4		8			7
4	2	7		6		3	8	
	3		8	2	6	5		
2			7	3		8	9	
7	8			1		6		

सुडोकू 68

1

पहेली चित्र



19

9

20

14

झगड़ा निपटाने के पाँच तरीके

अमन मदान
चित्र: पूजा के मेनन

जब किसी से मनमुटाव होता है तो क्या हमारे पास केवल उन पर चिल्लाने या उनसे हाथापाई करने का ही विकल्प होता है? या क्या हम कुछ और भी कर सकते हैं?

एक दिन रीना का अपने सबसे अच्छे दोस्त से झगड़ा हो गया। घर आकर वह भुन-भुन कर रही थी, “मैं उसे पीट दूँगी। नहीं, मैं उससे बात करना बन्द कर दूँगी। नहीं, नहीं जाकर उससे सीधे बात करना ज़्यादा अच्छा होगा।” दीदी ने उसे देखकर मुस्कराकर पूछा “क्या सोच रही हो, रीना?” “झगड़ा निपटाने के कितने तरीके होते हैं, दीदी?” रीना ने पूछा। दीदी हँसी और बोली, “ये कैसा सवाल है?” “सच में, बताओ मुझे, किसी के साथ अगर टकराव है या मतभेद है तो उससे जूझने के कितने तरीके होते हैं।”

“अच्छा तो सुनो,” दीदी ने कहा। “मैं तुम्हें पाँच तरीके बताती हूँ और तुम बताना तुम्हें सबसे अच्छा कौन-सा लगा और क्यों। कल्पना करो कि तुम एक छोटे-से देश की रानी हो और तुम्हारी अपने पड़ोसी देश से दुश्मनी है। और तुम उन पर आक्रमण कर देती हो... यह है पहला तरीका, ज़ोर-ज़बरदस्ती का।”

रीना कल्पना करने लगी कि वह सिंहासन पर बैठी है। अपने घोड़े पर बैठकर वो अपनी फौज के आगे-आगे जा रही है और फिर उसने दुश्मन देश के सारे फौजियों को मार गिराया। मगर यह तभी मुमकिन होगा जब उसके पास दुश्मन देश की फौज से बहुत ज़्यादा बड़ी फौज हो। “और उसके बाद क्या दुश्मन देश के लोग तुम्हारी बातें मान लेंगे?” दीदी ने पूछा। “नहीं, मानेंगे तो नहीं, उलटा मुझ से और ज़्यादा नफरत करेंगे,” रीना ने कहा। “हाँ, मगर यह एक तरीका है और कई बार यही करना ठीक रहता है,” दीदी ने कहा।

“दूसरा तरीका इसके ठीक उलट है — ज़ोर-ज़बरदस्ती करने की बजाय उनकी सारी बातें मान लो। इसे कहते हैं समर्पण करना।” रीना कल्पना करती है कि दुश्मन देश की फौज उसकी अपनी फौज से बहुत बड़ी है। फिर वह दूसरे देश की रानी के सामने झुक रही है और उसके सामने अपने हथियार डाल रही है। “नहीं, नहीं, यह तो नहीं चलेगा। कोई और तरीका बताओ,” वह बोली। दीदी ने कहा, “लेकिन कभी-कभी यह तरीका भी सही होता है। हर बार तुम्हारे पास झगड़े में जीतने के साधन तो नहीं हो सकते। और यह भी हो सकता है कि तुम्हें समझ में आए कि दूसरे पक्ष की बातें सही हैं। तो उनको मान लेना ही समझदारी होगी।”

“तीसरा तरीका है,” दीदी आगे बोलीं, “कि तुम झगड़े को टाल दो। न हार मानो, न युद्ध करो, बस झगड़े के मसले के बारे में सोचो ही मत।” रीना सोचने लगी कि पड़ोसी देश की रानी उसके बारे में बुरा-भला कह रही है, मगर वह खुद इस के बारे में कोई बात नहीं कर रही है। दूसरी रानी की बातें अनदेखी और अनसुनी कर रही है। “कई बार ऐसा करना ही सबसे अच्छा होता है। ज़ोर-ज़बरदस्ती न करें, अपने फौजियों की जानें ऐसे ही क्यों गँवा दें, वे भी किसी के बच्चे हैं।” दीदी ने कहा।

“चौथा तरीका,” दीदी ने कहा “समझौते का है। थोड़ी उनकी बात मान लो, थोड़ी अपना बात मनवा लो।” रीना कल्पना करने लगी कि दोनों रानियाँ बैठकर भाव-ताव कर रही

हैं। जब दोनों को लगा कि उन्हें कुछ अच्छा मिल रहा है तो समझौता हो गया। दोनों रानियाँ बहुत खुश नहीं हैं। मगर ये युद्ध में अपने-अपने सैनिकों को मरते देखने से तो अच्छा ही है। “जब दोनों पक्ष बराबर ताकत वाले होते हैं, तो कोई भी ज़बरदस्ती करके जीत नहीं सकता। तब सबसे अच्छा रास्ता समझौते का ही होता है।”

“पाँचवाँ और सबसे मीठा और बढ़िया तरीका संवाद का है।” दीदी बोली। “इसमें तुम दोनों एक-दूसरे को समझते हो और दोनों पक्षों में से कौन-सी बातें सही हैं उन पर मिलकर सोचते हो।” रीना कल्पना करने लगी कि वह और दूसरी रानी बैठकर लम्बी बात कर रहे हैं। दोनों एक-दूसरे के नज़रिए को समझने की कोशिश कर रहे हैं और प्यार से

दूसरे को अपनी बात समझा भी रहे हैं। मिलकर एक नई समझ बना रहे हैं। “अगर यह कर सको, रीना, तो सब से ज़्यादा सुखी रहोगी,” दीदी ने कहा। “जो सही है वही होगा, किसी की मनमानी नहीं होगी। सब की साझी समझ से निर्णय होगा।”

रीना ने कहा, “हाँ, अगर यह हो सके तो सबसे अच्छा यही होगा। इसी से सही निर्णय होगा, दूसरे तरीकों से कहीं ज़्यादा।” और वह सोचने लगी कि दोनों रानियाँ दोस्त बन गई हैं। वे साथ में घूम-खेल रही हैं और उनकी प्रजा खुशहाल जीवन बिता रही है। फिर वह सोचने लगी कि मैं अपने दोस्त के साथ संवाद कैसे करूँ...।



1.



2.

$$20+20+20=60$$

क्या तुम 20 के अलावा किसी और संख्या को तीन बार इस्तेमाल करके 60 उत्तर ला सकते हो? (तुम जोड़, घटाव, गुणा या भाग किसी का भी इस्तेमाल कर सकते हो।)

3.

इन तीनों तीलियों को तोड़े बिना 6 बनाना है। कैसे करोगे?

4.

एक कमरे में दस लोग बैठे हैं। सभी लोग पूरे कमरे को और एक-दूसरे को देख सकते हैं। हरमन को उस कमरे में एक सेब ऐसे रखना है कि एक को छोड़कर बाकी सभी लोग उसे देख सकें। उसे सेब को कहाँ रखना चाहिए?



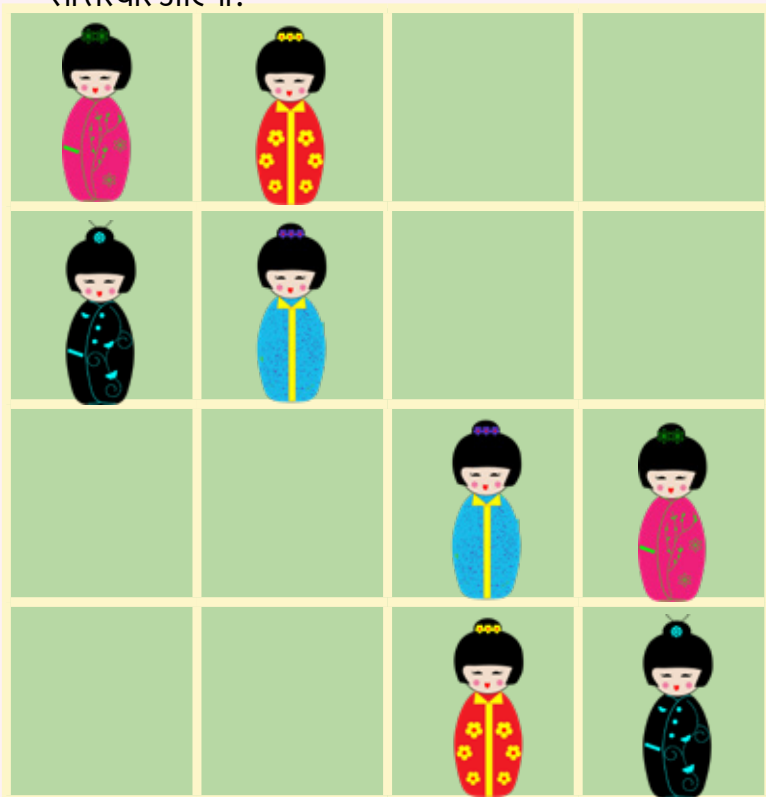
भूलसुधार: जुलाई माह की माथापच्ची के सवाल नम्बर 2 में गलती से शहरों के नाम लिखा गया था। वहाँ जानवरों के नाम होगा।

5.

दी गई ग्रिड में कई पेशों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

आ	धो	डा	कि	रि	चौं	व	द	म
न	वै	बी	सा	शि	की	की	पा	जीं
स	र्स	ज्ञा	न	क्ष	दा	ल	द	क
फा	मैं	क	नि	क	र	दा	मो	ला
ई	पु	मा	सौं	क	जि	सो	ची	का
क	लि	डॉ	ली	कु	र	मा	इ	स
मीं	स	ग	क्ट	म	धो	ब	स	या
इं	जी	नि	य	र	लि	मा	ढ	ना
क	ला	का	र	ना	ह	ल	वा	ई

6. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग लड़की की तस्वीर आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी तस्वीरें आएंगी?



7. चार कटोरियाँ उलटी करके रखी गई हैं। सभी कटोरियों के नीचे बराबर संख्या में टॉफियाँ रखी हैं। सभी के ऊपर चिप्पी लगी है — 5 या 6, 7 या 8, 6 या 7 और 7 या 5। लेकिन इनमें से केवल एक चिप्पी सही है। क्या तुम बता सकते हो हरेक कटोरी के नीचे कितनी टॉफियाँ रखी गई हैं?

9.

जिया ने काउंटर पर एक किताब रखी। काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने कहा, “30 रुपए।” जिया ने उसे 30 रुपए दिए और बिना किताब लिए चली गई। उस व्यक्ति ने उसे जाते हुए भी देखा लेकिन किताब लेने के लिए वापिस नहीं बुलाया। क्यों?

माथा पच्ची

फटाफट बताओ

मैं ठण्डा हो सकता हूँ
और गरम भी, कड़क हो
सकता हूँ और मुलायम
भी, जम भी सकता हूँ
और हर चीज़ के ऊपर
से फिसल भी सकता हूँ।
बताओ मैं कौन हूँ?

(निग)

कौन-सा शब्द है जिसे
गलत कहो तो भी सही
ही होता है?

(नग)

शरीर है इसका लम्बा-लम्बा
मुख है कुछ-कुछ गोरा
पेट में इसके काली डण्डी
लिखे नाम यह मोरा

(नग)

नींद में मिलूँ, जागने पर नहीं
दूध में मिलूँ, पानी में नहीं
दादी में मिलूँ, नानी में नहीं
गेंद में मिलूँ, बल्ले में नहीं

(‘ड’ गग)

जवाब पेज 42 पर

मेरा
पप्पा

मेरे पापा
MY papa



चित्र: हर्षिका, तीसरी, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

बीमार

जीशान
मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

जब हो जाते हैं बीमार
दवा खानी पड़ती है बार-बार
पैसे लगते हैं हज़ार
पैसे ना रहें तो इलाज कराना पड़ता है उधार
थोड़े दिन में तबीयत में आ जाता है सुधार
हमें पता है क्योंकि हम भी हुए हैं बीमार



मेरी बात

अरसुमा
सावित्री बाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी
भानपुर, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं दो साल पहले स्कूल जाती थी। फिर मेरे पापा की तबीयत खराब हो गई। क्योंकि मेरे पापा काम पर नहीं जा सकते थे, इसलिए अम्मी दूसरों के घरों में जाकर काम करती थीं। इसलिए मुझे मेरे छोटे भाई और पापा को सँभालना पड़ता था। इसी वजह से मेरा स्कूल छूट गया।



नींद को पत्र

द्युति
चौथी, फातिमा स्कूल
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

प्यारी नींद,

दुनिया की सबसे प्यारी चीज़ तुम ही हो। जब तुम मेरे पास होती हो तो मुझे सबसे ज़्यादा सुख मिलता है। कभी-कभी मेरे पास अधिक काम होता है और उस समय तुम आने लगती हो तो बड़ी उलझन हो जाती है। मैं तुम्हें कभी लौटाना नहीं चाहती।

सुबह देर तक तुम मेरे साथ रहती हो। यह भी अच्छी बात है। पर पापा तुमसे बहुत चिढ़ते हैं। वे कई बार मुझे डाँट चुके हैं कि तुम से मित्रता छोड़ दूँ। तुम्हारी वजह से मेरी स्कूल बस भी छूट चुकी है।

एक खास बात कहना चाहती हूँ कि तुम रात को देर तक नहीं आतीं और सुबह देर तक साथ नहीं छोड़तीं। प्लीज़ रात को जल्दी आ जाया करो और सुबह जल्दी जाया करो।

अच्छा, फिर कभी आगे की बात करूँगी।

तुम्हारी दोस्त

द्युति



मेरा गाँव बलिया में है। बलिया पूर्वी उत्तर प्रदेश का अन्तिम ज़िला है। यहाँ जाने के लिए मैं बहुत उत्साहित था। निर्धारित समय पर मैं नोएडा से चला। रास्ते में मथुरा और कई ऐतिहासिक जगहों जैसे आगरा, कन्नौज को छूता हुआ नवाबों के शहर लखनऊ पहुँचा। कुछ देर आराम करके अयोध्या पहुँचा और फिर 3 घण्टे में बलिया पहुँचा। यह वही शहर है जो 1942 में सबसे पहले स्वतंत्र घोषित हुआ। इसके नायक थे चिट्ठू पाण्डे। मैंने उनकी मूर्ति देखी।

अन्त में मैं अपने गाँव पहुँच गया। वहाँ हरे-भरे धान के खेत फैले हुए थे। मैंने वहाँ पर लोगों को खेतों में काम करते हुए देखा और गाय से दूध निकालते हुए देखा। मुझे बहुत मज़ा आया जब छम-छमाकर बारिश हुई तो खुले आसमान में मैंने इन्द्रधनुष देखा। रात के अँधेरे में मुझे जुगनू की आवाज़ सुनाई दी और आकाशगंगा का दर्शन भी हुआ। मुझे गाँव पसन्द आया।



चित्र: कुशाग्रा वर्मा, आठ साल, डॉन बॉस्को स्कूल, हल्द्वी, नैनीताल, उत्तराखण्ड



चित्र: निजल शाह, बारह साल, बाल भवन सोसाइटी, वड़ोदरा, गुजरात

बारिश

झील अनिल कर्णे
छठवीं
प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

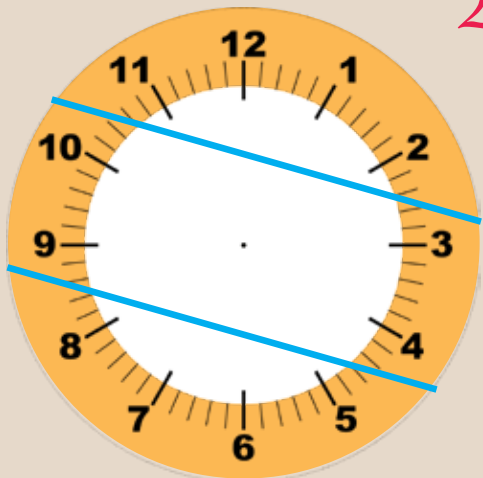
बारिश हूँ मैं बारिश हूँ
ठण्डी-ठण्डी बारिश हूँ
जहाँ चाहूँ बरस जाऊँ
सब कुछ धोकर चली जाऊँ

किसानों की मेहनत देखकर
चली जाती हूँ खेत में बरसकर
गुस्सा हो जाती हूँ अगर
बहा ले जाती हूँ बाढ़ बनकर

सूखती हूँ फसलें जब होती हूँ मैं नाराज़
फिर भी बरसती हूँ अगले साल

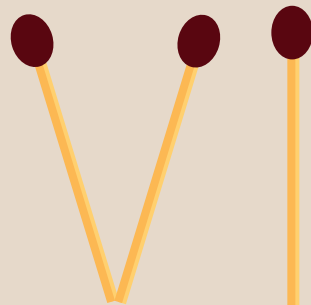


1.



2. $60+60-60=60$

3.



4.

किसी भी एक व्यक्ति के सिर के ऊपर। इससे बाकी सभी लोग उसे देख सकेंगे सिवाय उस व्यक्ति को छोड़कर।

5.

आ	धो	डा	कि	रि	चौ	व	द	म
न	वै	बी	सा	शि	की	की	पा	जी
स	स	जा	न	क्ष	दा	ल	द	क
फा	मै	क	नि	क	र	दा	मो	ला
ई	पु	मा	सौ	क	जि	यो	ची	का
क	लि	डों	ली	कु	र	मा	इ	स
मी	स	ग	क्ट	म	धो	ब	स	या
इं	जी	नि	य	र	लि	मा	ढ	ना
क	ला	का	र	ना	ह	ल	वा	ई

7. चूँकि एक ही चिप्पी सही है, इसलिए टॉफियों की सही संख्या वही होगी जो केवल एक ही चिप्पी में लिखी होगी। यानी कि वो संख्या दो चिप्पियों में नहीं लिखी हो सकती। क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो दोनों चिप्पियाँ सही हो जाएँगी। इस हिसाब से सही संख्या केवल 8 ही हो सकती है। यानी हरेक कटोरी के नीचे 8 टॉफियाँ होंगी।

8. क्योंकि उसने वो किताब किराए पर ली थी और उसे वापिस करने की तारीख निकल गई थी। इसलिए उसने 30 रुपए जुमनि के तौर पर दिए थे।

6.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



	1 पो	2 ख	र		3 ई		4 टी	
5 गू	ल	र			6 प	ट	7 स	म
		8 मो	ली	घू	र		झी	
9 क	10 ने	र			11 घा	12 बी		13 ज
14 द	ल			15 फ		र		द
	16 पी	प	17 की	मै		18 ब	खख	र
	लि		ल		19 रो	हू		क
20 म	श	21 रु	म			22 टी	23 ला	
कका		ई		24 झा	डी		25 ल	रसी

सुडोकू-68 का जवाब

8	7	4	1	5	3	9	6	2
6	9	3	2	8	7	1	4	5
5	1	2	6	4	9	7	3	8
9	5	8	3	7	2	4	1	6
3	6	1	4	9	8	2	5	7
4	2	7	5	6	1	3	8	9
1	3	9	8	2	6	5	7	4
2	4	6	7	3	5	8	9	1
7	8	5	9	1	4	6	2	3



दुनिया का सबसे पुराना अखबार अब नहीं छपेगा

सन् 1703 से छपता आ रहा ऑस्ट्रिया देश का सरकारी अखबार *वीयनर ज़ैयटुंग* अब प्रेस में नहीं छपेगा। ऐसा इसलिए कि इसे छापना अब घाटे का सौदा हो गया है। हाल ही में सरकार ने यह नियम बनाया है कि अखबार में छपने वाली सूचनाओं या विज्ञापनों के लिए छपवाने वाली कम्पनियों को पैसे देने की ज़रूरत नहीं है। सरकार के इस निर्णय के कारण अब ये अखबार सिर्फ ऑनलाइन छपेगा और ऑस्ट्रिया के गैजट (मुख्य सूचना पत्रिका) की भूमिका भी नहीं निभाएगा।

खेल-खेल में व्हेल करते हैं नावों का नुकसान

और्का व्हेल कुछ समय से भूमध्य सागर में नावों पर हमला करते आ रहे हैं। पिछले साल इन्होंने तकरीबन 200 हमले किए। पर पिछले महीनों में इनकी यह करतूत और बढ़ गई है। एक ही महीने में यह 20 नावों में तोड़-फोड़ का कारण बने हैं। इनमें से 3 नावें तो डूब ही गईं। यह ऐसा क्यों कर रहे हैं ये पता नहीं। लेकिन इतना पता है कि ये पाल वाली नावों पर ज़्यादा वार करते हैं, मोटर वाले बड़े जहाज़ों पर नहीं।

एक अनुमान है कि इसकी शुरुआत खेल-खेल में हुई होगी और क्योंकि ये समूह में रहते हैं बाकियों ने भी यह व्यवहार सीख लिया है। ये व्यवहार दुनिया के अन्य और्का व्हेल में भी फैलेगा इसकी सम्भावना कम है क्योंकि यहाँ के और्का अन्य और्का से कम ही संवाद करते हैं।



एडिसन का बड़ा झूठ

ये तो काफी लोग जानते हैं कि थॉमस एडिसन ने 1878 में बल्ब का आविष्कार किया। लेकिन कम ही लोगों को मालूम है कि उनका बल्ब कुछ ही क्षणों के लिए जलकर बन्द पड़ जाता था। एडिसन को पता था कि दुनिया में अन्य लोग भी इसी काम में लगे हैं और उन्हें बाकियों को हराना था। तो उन्होंने 1878 में झूठ कहा कि उनसे लम्बे समय के लिए जलने वाला बल्ब बन गया है। उन्होंने पत्रकारों को समूह में ना बुलाकर, एक-एक करके बुलाकर उनको कैसे भी पटा लिया कि उनका बल्ब लम्बे समय के लिए जलता है। सबको उल्लू बनाकर वे काम पर लगे रहे और लगभग एक साल बाद 1879 में उन्होंने वाकई में लम्बे समय तक जलने वाला बल्ब बना डाला।

मोर

चित्र व कविता: नेहा बहुगुणा

बसन्त के दिनों में
फूल लगे झकझोर

कुछ गिर गए
कुछ खो गए

और कुछ मेरी डायरी
में आके सो गए

सर्दी में डायरी खोली तो
फूल मोर हो गए

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन

मेक